International Journal of History 2024; 6(1): 179-181

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2024; 6(1): 179-181
Received: 10-03-2024
Accepted: 15-04-2024

विजेन्द्र दीवाच
इतिहास विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
विजेन्द्र दीवाच
इतिहास विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

राजस्थान में सती प्रथा और इसके प्रमुख कारक

विजेन्द्र दीवाच

सारांश
रंगीले राजस्थान की छवि के दूसरी ओर राजस्थान का सामाजिक ताना–बाना अलग–अलग जकड़नों से जकड़ा हुआ था। एक तरफ राजस्थान का इतिहास महिलाओं के शौर्य और अदम्य साहस से सरोबार है तो दूसरी तरफ महिलाओं के सामाजिक जीवन पर बहुत कड़ा प्रतिबन्ध लगाने के मामले में कंलकित है। राजस्थान की महिलाओं पर अनेक कुप्रथाओं को थोपा गया था। सबसे प्रमुख कुप्रथा सती थी। सती प्रथा में महिलाओं को मृत पति की चिता के साथ जिन्दा जला दिया गया था। सती कुप्रथा के धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सामाजिक कारण थे। इन सब कारणों की वजह से राजस्थान की महिलाओं का जीवन जीना बहुत कठिन था।

मुख्य शब्दः सती प्रथा, जनाना महल, पड़दायते, पासवाने, सामन्त, चारण–भाट

प्रस्तावना
पश्चिमी जगत के इतिहासकारों के अनुसार सती प्रथा का उद्भव शक/सिथियन शासकों द्वारा हुआ। भारत में शक शासकों के द्वारा ही सती प्रथा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ था। 300 ईसा पूर्व में पंजाब के इलाकों पर विदेशी हमले होते रहते थे। इससे पंजाब में सती प्रथा का प्रचलन होता दिखाई पड़ता है। शुरूआत में सती प्रथा सैनिक वर्ग में ही दिखलाई पड़ती है। युद्वों में सैनिक के मरने पर पत्नी को सैनिक की चिता के साथ ही जिन्दा जला दिया जाता और इसे ही सती कह दिया जाता था। यूनानी इतिहासकारों के अनुसार 300 ईसा पूर्व के आसपास ईरान में एक युद्व में हिन्दुस्तानी सैनिक की मृत्यु हो गई तो उसकी दो पत्नियों ने पति की चिता के साथ ही जलना चाहा था। उनमें से एक के छोटा बच्चा होने के कारण रोक दिया गया और दूसरी को सती होने दिया था।[2]
वैदिककालीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति में सती प्रथा के प्रचलन पर थोड़ा मतभेद दिखाई देता है तथा कुछ इतिहासकारों के अनुसार वैदिक काल में सती प्रथा के कोई मौजूद नहीं थे।[3] मैक्समूलर जैसे विद्वान भी इस बात पर जोर देते हैं कि वैदिक काल में सती प्रथा का प्रचलन नहीं था।[4] वैदिक युगीन भारत में महिला से संबंधित नियोग प्रथा थी, जिसके माध्यम से महिला अपने पति के अलावा अन्य पुरूष से संबंध स्थापित करके संतान उत्पन्न कर सकती थी। इस तरह सन्तान उत्पन करने के आधार पर कहा जाता है कि इससे महिलाओं को सती होने की जरूरत नहीं थी।[5] ऐसे तर्को को कुतर्क भी कहा जा सकता है। इस प्रकार देखते है कि प्राचीनकालीन भारत में सती प्रथा मौजूद थी लेकिन बड़े पैमाने पर प्रचलित नहीं थी।[6] प्रसिद्व भारतीय शासक हर्ष के दरबारी विद्वान बाणभट्ट की पुस्तक कादम्बरी में भी सती का उल्लेख मिलता है। बाणभट्ट ने सती प्रथा को घोर बर्बरतापूर्ण कार्य कहा था। मध्यकाल में सती प्रथा का प्रचलन खूब ज्यादा और बर्बर तरीके से हुआ था। मध्यकाल में शासक की मृत्यु के बाद बहुत सारी महिलायें एक साथ ही जलाये जाने लगी थी।[7]
राजस्थान में बड़े पैमाने पर महिलायें सती हो रही थी या सती की जा रही थी। सती होने से पहले महिलाएं नहाती थी। पूजा–पाठ करके अपने माथे पर तिलक लगाती थी। गहनों से संजती संवरती थी। गांव गलियों से गुजरकर चिता स्थल तक पहुंचती थी।[8] ढोल–नगाड़ों के बीच महिलायें जिन्दा जलकर सती हो जाती थी। इस तरह महिलायें इस कुप्रथा का पालन करती थी।[9]

तत्कालीन समाज की धार्मिकता
राजस्थान में महिलाओं को सती होने के लिए प्रेरित किया जाता था और कहा जाता था कि मृत पति की चिता के साथ जलने वाली महिलायें पति के साथ ही स्वर्ग में प्रवेश करेंगी।[10] इस प्रकार पति–पत्नि का साथ सात जन्मों तक अटूट रहेगा। महिलायें अपने पति की मृत देह के साथ तो सती हो ही रही थी और इसके साथ कहीं–कहीं पर अपने मृत पुत्र और मृत पोते को गोद में लेकर भी सती हो रही थी।[11] चुरू जिले के गनौड़ा नामक गांव में एक महिला सन् 1718 ई. के आसपास

अपने मृत बेटे के साथ सती होने के प्रमाण मिलते हैं।[12] बीकानेर के जसोलई नामक स्थान पर एक शिव मंदिर के शिलालेख से एक महिला के अपने मृत पोते के साथ सती होने के प्रमाण मिलते हैं।[13] इस तरह सती हुई महिलायें सती माता कहलाती थी।[14] इन सती माताओं के मंदिर बना दिये जाते थे। लोगों को विश्वास होता था कि यह सती माताएं रोगों और दुःखों से मुक्ति दिलाती हैं। इस प्रकार यह धार्मिक अंधविश्वास महिलाओं को मृत पति, बेटों और मृत पोतों के साथ जिन्दा जलने को मजबूर करके सती प्रथा को बढ़ावा देने में एक प्रमुख कारक था।

राजनीतिक वातावरण

राजस्थान की मेवाड़ रियासत के शासक भीमसिंह ने अपनी पुत्री कृष्णा कुमारी की सगाई जोधपुर के राजा भीमसिंह से की थी। लेकिन कुछ समय बाद जोधपुर के भीमसिंह की मृत्यु हो गई और मेवाड़ के भीमसिंह ने अपनी बेटी की सगाई जयुपर के शासक जगतसिंह के साथ कर दी। इस बात को जोधपुर के नये शासक ने अपना अपमान समझाा और जयपुर पर आक्रमण कर दिया। इस विवाद से परेशान होकर जोधपुर के शासक भीमसिंह ने अपनी बेटी कृष्णा कुमारी को जहर देकर मार दिया। इस प्रकार एक निर्दोष बच्ची रियासतों की सियासतों के भेंट चढ़ा दी गई थी। यह घटना मेवाड़ के माथे पर कलंक थी।[15] यहां कृष्णा कुमारी सती नहीं हुई थी लेकिन इस प्रकार की परिस्थितियां महिलाओं के लिए सती होने का वातावरण बनाती थी और महिलाएं दबाव तथा मजबूरी में सती होने में ही भलाई समझती थी।

राजस्थान में राजपूत वर्ग ही शासक और सामन्त वर्ग था। युद्व में शासक की मृत्यु होने पर महिलाएं सती हो जाती थी, क्योंकि दुश्मन के पाले में पड़ने पर महिलाओं को दुष्कर्मों की शिकार बनाया जाता था। इसलिए महिलाएं दुश्मन के पाले में पड़ने की बजाय सती होना ज्यादा सही समझती थी, ताकि अपने शरीर और आत्मा को इंसान रूपी भेड़ियों द्वारा नोंचने से बचा सकें।[16] महिलायें पति से संबंधित किसी भी निशानी के साथ जैसे–पगड़ी को गोद में लेकर जिन्दा ही चिता में बैठकर जल जाती थी। इसके पीछे कुल की मर्यादा का भी ध्यान रखा जाता था। जो महिलाएं सती हो जाती उनके लिए कहा जाता था कि इन्होंने कुल की मर्यादा की रक्षा करके महान कार्य किया है। इस तरह सती होने वाली महिलाएं पूजनीय हो जाती थी।[17]

आर्थिक परिदृश्य

राजस्थान की रियासतों के शासक एक से अधिक विवाह करते थे जिससे जनाना महलों में अनेक महिलाएं एकत्रित हो जाती थी। इन महिलाओं में अपना वर्चस्व बनाये रखने की होड़ रहती थी। जनाना महलों में सभी महिलाएं एक पद सोपान क्रम में रहती थी और सभी महिलाओं को इस पद सोपान क्रम के अनुसार ही आर्थिक अधिकार प्राप्त होते थे। जनाना महलों में राजमाता पटरानी, पड़दायते, पासवाने, गोली और दासियां इत्यादि महिलाएं रहती थी।[18]

पुराने शासक की मृत्यु होने पर नया शासक बनता था। उसकी अपनी माता, पत्नियां, पासवाने, पड़दायते, दासियां और गोलियां होती थी। इस तरह पुराने मृत शासक की विधवाओं की परिस्थितियां खराब हो जाती थी। इन सभी विधवाओं के सभी प्रकार के अधिकारों में कटौती हो जाती थी। इनके नौकर–चाकर और जागीरें कम कर दी जाती थी। ऐसी परिस्थितियों में महिलाएं मृत शासक के साथ सती होना ज्यादा सही समझती थी। बुजुर्ग महिलाएं मृत शासक के साथ सती होकर अपनी गरिमा को बनाये रखना चाहती थी। इस कार्य के लिए नये शासक वातावरण भी ऐसा ही निर्मित करते थे कि महिलाएं लाचार होकर सती के लिए तैयार हो जाये। एक झटके में जनाना महलों की महिलाओं को आर्थिक अधिकारों से वंचित करना भी सती प्रथा के बढ़ावे में अहम योगदान था।[19]

सामाजिक वातावरण

राजस्थान के समाज में अधिकतर सती होने वाली महिलाएं राजपूत वर्ग यानी शासक और सामन्त वर्ग से ही थीं। ऐसा नहीं है कि अन्य वर्गो की महिलाएं सती नहीं होती थी बल्कि मोदी, माहेश्वरी, जैन, ओसवाल, सुनार, दर्जी, अग्रवाल, ब्राह्मण, जाट, चारण और डाकोत वर्ग की महिलाओं के सती होने प्रमाण मिलते है।[20] लेकिन राजपूत समाज में महिलायें बड़े पैमाने पर सती हो रही थी। इसके पीछे महिलाओं की बचपन से की जा रही कडिशनिंग जिम्मेदार थी। छोटी बच्चियों को बचपन से ही पूर्व में सती हो चुकी महिलाओं के किस्से–कहानियों से रूबरू करवाया जाता था। शासक वर्ग की मिलीभगत से चारण–भाटों द्वारा सती प्रथा का बहुत जोर–शोर से महिमामंडन किया जाता था। महिलाओं को प्रेरित किया जाता था कि सती होने पर पीहर पक्ष और ससुराल पक्ष दोनों का गौरवगान चारों तरफ फैल जायेगा। महिलाओं को बताया जाता था कि जीने से ज्यादा सती होकर मरना बड़ी महानता का काम है।[21]

राजस्थान के बड़े–बड़े कवियों ने सती प्रथा की महानता में अपने कसीदे गढ़े थे। सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपनी पुस्तक वीर सतसई के एक दोहे में एक महिला के मुख से कहलवा रहे है कि – "हे मेरे पति! मैं इस जीवन में सती होना पसन्द करती हूँ। मेरे पति आप रणस्थल से डरपोक बनकर भाग मत आना, नही तो मैं किसके साथ सती हो पाऊंगी? यदि आप डरपोक हो तो मुझे मेरे पीहर भेज दीजिये ताकि मैं एक डरपोक आदमी की शक्ल देखने से बच जांऊ।" इसी तरह एक बार किसी महिला ने साड़ी खरीदते वक्त उस नयी साड़ी की कीमत सूर्यमल्ल मिश्रण से पूछी तो उन्होंने कहा कि – "जिस दिन तुम यह साड़ी पहनकर मृत पति की चिता पर सती हो जाओगी उस दिन इसकी कीमत बतांऊगां।"[22]

इस प्रकार महिलाओं के चारो तरफ बचपन से लेकर बुढ़ापे तक सती प्रथा को अपनाने के लिए थोथा उन्माद जगाया जाता था। अच्छे तरीके से कंडिशनिंग की जाती थी। बहुत कम महिलायें इस थोथे उन्माद और बेकार की कंडिशनिंग से बच पाती थी। जो महिलायें अपने मृत पति के साथ सती नहीं होती थी उनकों हर पल और हर कदम पर अपमानित किया जाता था। जैसे राजस्थान में पाली के शासक अखैराज सोनगरा की मृत्यु के बाद उसकी दो रानियों ने सती ना होने का फैसला किया। दोनों रानियों के इस कदम की चारण–भाटों ने बहुत समय तक आलोचना की। दोनों रानियों की आलोचना में गीत लिख–लिखकर गाये गए और दोनों रानियों को अपमानित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई। चारण–भाटों ने अपने गीतों में लिखा कि यह रानियां महलों में ऐशो आराम फरमा रही हैं, वही बेचारा अखैराज सोनगरा ऊपर अकेला खाना बना रहा है। इस अपमान से दुःखी होकर दोनों रानियों ने अपने आपकों अग्नि के हवाले कर दिया।[23] ऐसे तथाकथित बुद्विजीवी लोग बौद्विक आंतकवाद का कार्य करते थे। इस प्रकार सामाजिक दबाव में आकर भी महिलायें सती हो जाया करती थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. समेस्ता : राजपूताना में सामाजिक कुरीतियां एवं निवारण (पश्चिमी राजपूताना के विशेष सन्दर्भ में 1800–1950 ई.), राजस्थानी ग्रन्थागार, प्रथम संस्करणः 2020, पृ. सं. 68
2. मजूमदार, आर.सी. : (संशोधित) दी हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ दी इंडियन पीपलः दी ऐज ऑफ इम्पीरियल यूनिटी, द्वितीय संस्करण, भारतीय विद्या भवन, बम्बई (चतुर्थ संस्करण) 1968, पृ. सं. 567–68
3. राठौड, डॉ. विक्रम सिंह : राजस्थान की संस्कृति में नारी, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृ. सं. 76

4. नरसिम्हा, एसः सती ए स्टडी ऑफ विंडो बर्निंग इन इंडिया, हार्पर कॉल्लिंस, नई दिल्ली, 1998, पृ. सं. 21
5. मेजर, एन्ड्रियाः सती ए हिस्टोरिकल अंथोलॉजी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस नई दिल्ली, 2007 पृ. सं. 50
6. बाणभट्ट, कादम्बरी, शर्मा, सी/एफः सती हिस्टोरिकल फिनोमिनलोजिकल एसेज, बनारसीदास मोतीलाल, नई दिल्ली, 1988, पृ. सं. 23
7. बाणभट्टः पूर्व उद्वृत, पृ. सं. 23
8. दुष्यन्त : स्त्रियां पर्दे से प्रजातंत्र तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, फर्स्ट एडिसन, 2012, पृ. सं. 29
9. अरोड़ा, डॉ. शशि : राजस्थान में नारी की स्थिति, तरूण प्रकाशन, बीकानेर, 1981, पृ. सं. 29
10. काणे, पी.वी. : धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग एक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 1988, पृ. सं. 351
11. थाम्पसन, एडवर्डः सती जार्ज ऐलन अनविन प्रेस, लन्दन, 1928, पृ. सं. 37–38
12. शर्मा , मधु और गौड़, लक्ष्मण : राजस्थान में सती प्रथा का अंत, शोधक, वॉल्यूम 20, पार्ट सी. सीरियल नं. 60, वर्ष 1991, पृ. सं. 129
13. व्यास, राजेद्र प्रसाद : पश्चिमी बीकानेर के अभिलेख एवं उनका ऐतिहासिक महत्व, राजस्थान, बीकानेर, 1984, पृ. सं. 183
14. सुमेस्ता : पूर्व उद्वृत, पृ. सं. 72
15. सुमेस्ता : पूर्व उद्वृत, पृ. सं. 77
16. दुष्यन्त : पूर्व उद्वृत, पृ. सं. 29
17. अरोड़ा, डॉ शशि : पूर्व उद्वृत, पृ. सं. 55
18. यादव, डॉ. संतोष : राजस्थान में स्त्रियों की स्थिति, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, फर्स्ट एडिसन 2023, पृ. सं. 19–20
19. जोशी, वर्षा : पोलिगमी एण्ड पर्दा : वुमैन एण्ड सोसायटी एमंग राजपूत्स, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1995, पृ. सं. 141–42
20. शर्मा, मधु और गौड़, लक्ष्मण : राजस्थान में सती प्रथा का अन्त, शोधक, अंक 20 सी, क्र.सं. 60, 1991, पृ. सं. 129
21. जोशी, वर्षा : पूर्व उद्वृत, पृ. सं. 152
22. दास, स्वामी नरोतम : (एडिटेड) वीर सतसई (सूर्यमल्ल मिश्रण का महाकाव्य) राजस्थानी ग्रन्थागार (पुनर्मुद्रित) पृ. सं. 40
23. भाटी, हुकम सिंह : सोनगरा सांचौरा चौहानों को वृहत इतिहास, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश केन्द्र, जोधपुर, 2013, पृ. सं. 89